1972C Panchkalyanak organizers: Suggestion and open letter
Panchkalyanak Pratishtha Karane walon ke naam khula patra
(Two articles in Jain Mitra, ca. 1972)

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करानेवालोंके नाम

खुला पत्र

प्रेषक–हीरालाल सिद्धान्त शास्त्री, ब्यावर

तीर्थंकरोंके पंच कल्याणक वास्तवमें संसारका कल्याण करनेवाले ही होते थे। उनसे प्रभावित होकर असंख्य प्राणी अपने आत्म कल्याणकी ओर अग्रसर होते थे और कितने ही तो उनके साथ ही मुक्तिको प्राप्त करते थे। तीर्थंकरोंकी उत्पत्ति इस पंचमकालमें बन्द हो गई तब हमारे आचार्यों और पूर्वजोंने उनकी स्मृतिको सदा कायम रखनेके लिए उन ही की प्रतिकृति स्वरूप प्रतिमाओंका निर्माण कराकर और उनकी प्राण-प्रतिष्ठाके लिए पंच कल्याणकोंका विधान किया। जिसके फल स्वरूप आज अढाई हजार वर्षमें हजारों पंच कल्याणक होकर लाखों करोडों हो नहीं, अपितु असंख्य मूर्तियोंका निर्माण हुआ जिसकी प्रत्यक्ष साक्षी हमारे तीर्थ-क्षेत्र और भारतके हजारों जैन मन्दिरोंमें विद्यमान लाखों अखण्डित प्रतिमाएं दे रही हैं। इधर एक हजार वर्षके भीतर विदेशी विधर्मी आक्रमणकारियोंने तथा पडोसी अन्य धर्मावलम्बियोंने तथा पडोसी अन्य धर्मावलम्बियोंने प्रचुर मात्रामें उनका संहार किया। जिसके साक्षी ये देवगढ जैसे तीर्थक्षेत्र दे रहे हैं।

आजसे ठीक ३५ वर्ष जब इसी देवगढ पर गजरथके साथ पंचकल्याणक प्रतिष्ठाका आयोजन किया जा रहा था तब समाजके कुछ विचारशील विद्वानोंने उसका विरोध किया। किन्तु नक्कारखानेमें तूतीकी आवाजके समान वह वातावरण कुछ समयमें ही शान्त हो गया और प्राचीन प्रतिमाओंके संरक्षणकी उपेक्षा करता हुआ जैन-समाज प्रति वर्ष पंच-कल्याणक करके हजारों मूर्तियोंकी प्रतिष्ठा करता आ रही है। इधर दस-पन्द्रह वर्षोंमें तो पंच-कल्याणकोंकी बाढसी आ रही है। जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण इसी फारवरीमें होनेवाले पंचकल्याणक हैं।

मैं पंच-कल्याणकोंका विरोधी नहीं हूं, जहां पर जैन मन्दिर नहीं हों, और जैन-संख्या बढ रही वहां उनका होना जरूरी है। किन्तु जहां पहलेसेही अनेक जिन-मन्दिर और सहस्रों प्रतिमाएं विद्यमान हैं वहां पर पंच-कल्याणोंका आयोजन करके और नई-नई प्रतिमाओंको प्रतिष्ठित करके मन्दिरोंमें विराजमान करनेकी आवश्यकताको मैं अनुभव नहीं करता, प्रत्युत अनुचित मानता हूँ। खासकर इस दशामें जब कि इन्हीं दिनों हमारे प्राचीन तीर्थक्षेत्रों परसे अति प्राचीन एवं कलाकी दृष्टिसे अति सुन्दर और महत्वपूर्ण सैकडों उत्तुंग प्रतिमाओंके शिर काट कर अपहरण किये जा रहे हों। सबसे अधिक दुःखकी बात तो यह है कि हम इस संहारसे उनकी रक्षा नहीं कर पा रहे हैं और नित्य नई-नई प्रतिमाओंकी प्रतिष्ठा करा रहे हैं। आज प्रायः सर्वत्र यही देखनेमें भगवान्‌की संख्या बढ रही है और उनके दर्शन-पूजन करनेवाले भक्तोंकी संख्या घट रही है। आज अनेक स्थानों पर देखनेमें आता है कि जिनके माता पिताओंने मन्दिर बनवाये और मूर्तियोंकी प्रतिष्ठा कराई उनके ही सपूत पूजन करना तो दूर रहा, दर्शन करनेसे भी कतराते हैं। इससे अधिक दुःखकी और क्या बात हो सकती है?

मैं जानता हूँ कि मेरे अकेलेके विरोध करनेसे तबतक कुछ नहीं होगा जब तक कि जनताका उसमें पूर्ण सहयोग नहीं मिलेगा। इधर आठ दश वर्षोंमें होनेवाले पंच-कल्याणकोंके समय जैन-पत्रोंके द्वारा आवश्यक सुधार एवं कुछ नवीन आयोजन करनेके लिए सुझाव प्रकाशित किये थे। कुछ स्थानों पर आयोजकोंने कुछ सुझावोंके अनुकूल सुधार और आयोजन किये भी, पर वह नगण्यसे ही रहे। अभी२ जैन पत्रोंसे ज्ञात हुआ है कि शिवपुरी (म० प्र०) में बड़े उत्साह और अनेक आयोजनोंके साथ नव-निर्मित विशाल मन्दिरमें विराजमान करनेके लिए मूर्तियोंकी पंच-कल्याणक प्रतिष्ठा इसी फरवरी माहके प्रथम पक्षमें हो रही है। तथा दिगम्बर जैन विद्वत् परिषदकी रजत-जन्तीका समारोह भी किया जा रहा है। ऐसे समयमें कुछ आयोजनोंका सुझाव प्रतिष्ठा-कारकके लिए तथा अन्य स्थानोंके प्रतिष्ठा आयोजकोंकी जानकारीके लिए दे रहा हूँ। आशा है प्रतिष्ठाकारक लोग इन्हें अपने कार्यक्रमोंमें स्थान देकर और आजके युगानुरूप सांचेमें ढालकर इन पंच कल्याणकोंको सचमुचमें जन-कल्याणक बनानेका प्रयत्न करेंगे।

१. प्रत्येक कल्याणकके दिन प्रातःकाल ४ बजेसे ६ बजे तक प्रभाती मांगलिक गीत और आध्यात्मिक भजन आदिके सुनानेकी व्यवस्था की जाय। यदि भजनोपदेशक एवं विद्वानोंके द्वारा यह कराया जा सके तो और भी उत्तम है। ताकि लोग भगवत् स्मरण करते हुए जागृत हों और धर्म-साधनके उन्मुख हों।

२. पंचकल्याणकोंके समय अनेक सभाओंके अधिवेशनोंका आयोजन न किया जाय क्योंकि जनताका ध्यान मुख्य उद्देश्यसे हट कर उनकी ओर चला जाता है। मैं जानता हूं कि आयोजक इन सभाओंको इसलिए आमन्त्रित करते हैं कि उनसे आकृष्ट होकर अधिकसे अधिक जनता आवे। मैंने स्वयं अनेक स्थानों पर देखा है कि ऐसा करनेसे जनता मुख्य उद्देश्यसे वंचित रह जाती है।

शिवपुरीमें विद्वत्-परिषदका अधिवेशन हो रहा है और अधिकसे अधिक संख्यामें विद्वान् लोग पहुंचेंगे, यह निश्चित है। इस समयमें विद्वत् परिषदके कर्णधारोंसे निवेदन करूंगा कि वे केवल अपने उत्सवको मना कर ही कृतार्थ न हो जाय। किन्तु वे इस समय पांच दिनका अपना कार्यक्रम बनावें। जिसमें प्रतिदिन कमसे कम पांचसे विद्वानोंके शास्त्र-प्रवचन, व्याख्यान एवं भाषण कराये जावें।

इसके अतिरिक्त प्रति दिन विद्वानोंकी कमसे कम तीन घण्टे तत्त्वचर्चा हो। उसमें आजके प्रमुख प्रश्नों पर विचार-विनिमय किया जाय। जैसे चन्द्रलोक यात्रा क्या सम्भव है, या नहीं? अविरत सम्यक्त्वी क्या तत्त्व चर्चामें बालकी खाल ही निकाल कर अपनेको कृतकृत्य मानता है या उसके अनन्तरंग-बहिरंगमें भी विरक्तिकी स्वरूपाचरण चारित्रकी एवं आत्मानुभूति की कोई झलक प्रकाशमान होती है? तेरह और बीस पंथका क्या रहस्य है, पूजनमें स्थापना और विसर्जन क्या आवश्यक है?

यदि हैं तो क्यों? और नहीं हैं तो क्यों? इन और इन्हीं प्रकारके अनेक प्रश्न जो प्रतिदिन सर्वसाधारण जनता पूछती और उत्तर जाननेके लिए उत्सुक रहती है उनका

सर्व-सम्मत समाधान निकाला जाय और उसे शास्त्र-सभा आदिके समय सर्व-साधारणको बताया जाय। आज साधु-संस्थामें भी जो अनेक प्रवृत्तियां साधु-मार्गके प्रतिकूल बढ़ रही हैं उन पर भी विचारविमर्श किया जाय और उनका भी समुचित समाधान करके प्रतिष्ठामें उपस्थित जनताको बताया जाय।

३. गर्भ-कल्याणकके समय १६ स्वप्न दिखानेके पूर्व कुमारिका, देवियोंके द्वारा भगवानकी माताकी जो गर्भ-शोधनादि क्रियाएं की जाती हैं उनका महत्व दिखानेके लिए प्रथम दिनकी शास्त्र सभामें इस विषयपर विद्वानोंके प्रवचन कराये जावें और सम्भव हो तो लेडी डाक्टरके इस विषयमें व्याख्यान कराकर उनका महत्व बतलाया जावे।

इसी प्रसंगमें कृत्रिम गर्भ-निरोधक उपायोंके स्थान पर सहज सम्भव उपायोंको बताते हुए ब्रह्मचर्यका महत्व बतलाया जाय और भक्तामर काव्यके—"स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्न्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता" का महत्व बताकर लोगोंको आदर्श परिवार नियोजनका प्रशस्त मार्ग बताया जाय।

४. जन्म-कल्याणकके दिन शास्त्र सभामें भगवानके जन्मका महत्व तात्कालिक परिस्थितियोंका चित्रण करते हुए बतायी जाय और आज हमारा क्या कर्तव्य है इसका निर्देश किया जाय। आजके दिन भगवानके जन्माभिषेकके पश्चात् प्रतिष्ठा-कारकोंकी ओरसे दीन दुःखी एवं बुभुक्षित लोगोंको दान दिया जाय। और यदि सम्भव हो तो भोजन भी कराया जाय।

आजके ही दिन राजगद्दीके पूर्व भगवानकी बालक्रीडाओंका दिग्दर्शन कराया जाय। इसके लिए स्थानीय स्कूलोंके छात्रोंके द्वारा नाना प्रकारके व्यायामों एवं अन्य खेलोंके दिखानेका आयोजन किया जाय। इस समय बाल स्वरूप भगवानकी वहां उपस्थिति रहे।

भगवान्की राजगद्दीके समय राजाओंकी बोलियोंमें अधिक समय न लगाकर उनके द्वारा भेंट करानेके पश्चात् ही राजनीति पर कुछ खास विद्वानों द्वारा भाषण कराये जावें। इसके लिए यदि सम्भव हो सके तो ऐसे नेताओंको बुलाकर उनका राजनीति पर भाषण कराया जावे जो स्वयं मद्य-मांसका और आज सर्वत्र प्रचलित भ्रष्टाचारका प्रबल विरोधी हो तथा जिसकी ईमानदारी प्रसिद्ध हो।

चूंकि शिवपुरीका आयोजन मध्यप्रदेशमें हो रहा है इसलिए वहांके माननीय मुख्य मन्त्री श्री प्रकाशचन्द्रजी सेठीको बुलानेका साग्रह निवेदन किया जाय। मुझे विश्वास है कि वे अवश्य ही अपनी स्वीकृति देकर और पधार कर स्वच्छ राजनीति पर समुचित प्रकाश डालेंगे। इसी समय सरकार-द्वारा नित्य नये खोले जाने वाले कसाईखानोंका, मांस-भक्षण, अण्डा-सेवन एवं मद्यपानका विरोध करानेवाले योग्य भाषण भी कराये जावें। तथा परिवार नियोजनके नाम पर आज जो गर्भपात जैसे भ्रूण हत्याको पापको कानूनन वैध ठहराया जा रहा है, उसका प्रबल विरोध किया जाय और प्रस्ताव पास करके सरकारको भेजा जाय।

जिससे कि जनतामें आजके भ्रष्ट शासनके विरोध करनेकी भावना जाग्रत हो आजके दिन भरत-बाहुबलीका युद्ध बताकर बाहुबलीके त्यागका और तत्पश्चात् भरतके पश्चातापका महत्व भी बताया जावे। भगवान्की दीक्षाके समय आजके युगमें सम्भव त्यागका महत्व बताकर उसकी ओर लोगोंका ध्यान आकृष्ट किया जाय। तथा भगवान्के आहार-दानके अवसर पर लोगोंको दान देनेके लिए प्रेरित किया जाय।

५. भगवान्के ज्ञान-कल्याणकके दिन दिव्य ध्वनिका महत्व बतानेके लिए शास्त्रसभामें चारों अनुयोगोंके महत्व-परक भाषण विद्वानोंके द्वारा कराये जावें और ज्ञानकी महत्ता बताकर स्वाध्यायके लिए लोगोंको प्रेरित कर आत्म-कल्याणका मार्ग बताया जावे।

६. मोक्ष-कल्याणकके दिन तात्कालिक क्रियाओंके करनेके पश्चात मुक्तिका महत्व बतलाते हुए आजके समयमें इस जिस प्रकार सहजमें ही मुक्ति-प्राप्तिके लिए अग्रसर हो सकते हैं इस विषय पर विद्वानोंके भाषण कराये जावें।

चूंकि २५०० वीं निर्वाण जयन्ती समीप आ रही है और निर्वाण समितिकी ओरसे प्रस्तावित प्रति व्यक्ति एक पैसा देनेकी योजना अभी तक अनेक स्थानों पर कार्यान्वित नहीं हो रही हैं उसके लिए लोगोंको प्रेरित किया जाय और गत दो वर्षोंका पैसा एकी साथ देनेके लिए कहा जाय।

अन्तमें मैं प्रतिष्ठा-कारकोंसे पुनः निवेदन करूंगा कि वे अपनेको प्रतिष्ठा-सम्बन्धी कार्यक्रममें उक्त सुझावोंका यथा-स्थान समावेश कर उन्हें कार्यरूपमें परिणत करें जिससे कि सहस्रों कष्ट उठा कर और लाखों रुपया खर्च करके जाने वाले भाई-बहिन पंच-कल्याणक प्रतिष्ठासे यथार्थ लाभ उठाकर अपने घरोंको वहांकी पवित्र स्मृति ले जासकें।

नर देहकी गति

टंगस्टन धातु ये निर्मित यह,
माधव है लटका रहता।
तांबेकी निर्जीव छड़ों पर,
जल बुझ, तपता औ' घुटता॥

एक उत्तम विद्युत शक्तिसे,
बल्बमें वह संचालित है।
तोड़ कांचकी दीवारोंको,
मुक्तिको लालायित है॥

तीव्र प्रकाश मयी लहरसे,
सहसा ही वह विद्युत शक्ति।
'फ्यूज' कर देती उस मानवको;
दर्दनाक उसकी मुक्ति॥

तांबे की उन दो शलाओं पर,
टंगास्टनी नर बेदम-सा।
निर्जीव हो लटक जाता है;
बन्द घड़ीके पेण्डुलम-सा॥

झुन्नीलाल "आदर्श"-बांसा तारखेड़ा।

बम्बई दिगम्बर जैन प्रांतिक सभाके लिये, सम्पादक व प्रकाशक-मूलचन्द किसनदास कापड़िया, सूपाटिया चकला-सूरत
मुद्रक-मूलचन्द किसनदास कापड़िया, मुद्रणालय 'जैन विजय' प्रिं० प्रेस सूपाटिया चकला गांधीचौक-सूरत।

प्रतिष्ठाकारकोंको उपयोगी सुझाव।

यद्यपि आज नवीन मूर्तियोंके बनाये जानेकी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि देवगढ़, चन्देरी, दूधई, सीरोन आदि जैसे क्षेत्रोंपर असंख्य मूर्तियां योंही पड़ी हैं, जिनकी कि सार सम्भाल करनेवाला कोई नहीं है, तथापि लोगोंका मन नवीन प्रतिष्ठाओंकी ओर यदि दौड़ ही रहा है और वे समझाने पर भी नहीं मानते हैं, तो मेरा उनसे इतना निवेदन अवश्य है कि वे अपनी प्रतिष्ठाको तो कमसे कम आजके युगानुरूप आकर्षक और प्रभावक अवश्य बनावें और इसके लिए मैं कुछ सूचनाएँ देना आवश्यक समझता हूँ; क्योंकि अभी थामोंराकी पंचकल्याणक प्रतिष्ठामें जानेका अवसर मिला और पांचों ही कल्याणकोंको बहुत समीपसे देखा। देखकर जो ठेस मन पर लगी, वह वर्णनातीत है।

मैं समझता था कि प्रतिष्ठाचार्य मूर्तिमें केवल मन्त्र प्रतिष्ठा ही नहीं करते होंगे, अपितु पांचों कल्याणकोंके वास्तविक वर्णन द्वारा जन-मानसमें प्राण-प्रतिष्ठा भी करते होंगे। पर भा० व० दि० जैन संघके तत्त्वावधानमें होनेवाली इस प्रतिष्ठामें भी मैं वह चीज नहीं देख सका, जिसे देखनेके जन-मानस व्याकुल है।

मैंने यही सोचकर कि पंच कल्याणक प्रतिष्ठा किस रीतिसे की जाना चाहिए, कौन-कौनसी महत्त्वपूर्ण बात किस विधि-विधानके साथ जन-मानस पर किस ढंगसे अंकित की जाय काफी समयपूर्व प्रतिष्ठा प्रबन्ध समितिके प्रधानको पत्र भी लिखा, पर जो उत्तर मिला, वह यही सूचित करता है कि ये भोले-भाले बेचारे लक्ष्मीपति इन बातोंका क्या महत्त्व समझें।

थामोंरा प्रतिष्ठामें जो बातें खटकनेवाली हुई उनकी पुनरावृत्ति अहार, जबलपुर आदिमें न हो, एतदर्थ पहले कुछ जरूरी सूचनाएँ देना आवश्यक समझता हूँ।

(१) प्रतिष्ठाके समय विभिन्न सभाओंके अधिवेशन आदि न कराये जायें, क्योंकि इससे दर्शकोंका ध्यान दूसरी ओर आकृष्ट हो जाता है, और प्रतिष्ठाका उद्देश्य सिद्ध नहीं हो पाता।

(२) यदि प्रसंगवश अधिवेशन आदि किये भी जावें, तो उनके पंडाल वगैरह पृथक् बनाये जावें।

(३) यदि सभाओंके पृथक् मण्डप बनें, तो उन्हें प्रतिष्ठा मण्डपसे दूर बनाया जाये। वे इतनी दूर हों ताकि लाउडस्पीकरोंकी आवाज प्रतिष्ठा मण्डप तक न आसके।

(४) मेलेमें जो दुकान वगैरह लगें, उन पर यह पाबन्दी लगाई जावे कि वे लाउडस्पीकरोंका उपयोग उस समय नहीं कर सकते जिस समय कि भगवान्के कल्याणकके प्रदर्शनका समय निर्धारित है।

(५) भगवान्के कल्याणकके समय या शास्त्र-प्रवचनके समय किसी भी सभा आदिके प्रोग्रामको करनेकी अनुमति न दी जावे।

अब मैं पंच कल्याणक प्रतिष्ठाकी मुख्य बातों पर आता हूँ।

(१) प्रतिष्ठाचार्य प्रत्येक कल्याणककी प्रत्येक क्रियाका केवल ग्रन्थोक्त वर्णन ही न करें, अपितु उसकी युगानुरूप मनोवैज्ञानिक व्याख्या महत्ता और आवश्यकतासे भी लोगोंको अवगत करावें।

यदि कल्याणकके विधि-विधानके समय उसका युगानुरूप प्रतिपादन संभव न हो तो सायंकालकी शास्त्रसभाके समय विद्वान् लोग उस पर प्रकाश डालें।

(२) प्रतिष्ठामें शास्त्रसभा पांचों दिन की जावे। थामोंरामें वह केवल एकाध दिन ही हो सकी, इससे जनतामें क्षोभ रहा।

(३) प्रतिदिन प्रातःकाल प्रभाती गायन और २-१ संक्षिप्त मार्मिक प्रवचन अवश्य किये जावें। तथा उसी समय दिनभरका प्रोग्राम लाउडस्पीकर पर कह दिया जावे।

(४) गर्भ-संशोधन, गर्भावतार आदि क्रियाओंके समय उपस्थित महिलाओंको उनके संस्कारोंका महत्त्व बताया जावे कि वे भी कैसे अपनी कूंखसे ऋषभ और महावीर जैसे सुपुत्रोंको जन्म दे सकती हैं।

(५) भगवानके जन्मकल्याणकके दिन बालकोंके संरक्षणादिका युगानुरूप प्रतिपादन करना आवश्यक है। इस कल्याणकके दिन बालसंस्थाओंके खेल-कूदके विशिष्ट प्रोग्राम रखे जावें और उनमें भ० महावीरकी 'आमलकी क्रीड़ा' आदि जैसे युगानुरूप विविध कार्योंका प्रदर्शन बालकोंके द्वारा रक्खा जावे। प्रोग्रामके समय बालरूप भगवानकी उपस्थिति आवश्यक है।

(६) भगवानके द्वारा जब पुत्र-पुत्रियोंके शिक्षादिकी व्यवस्था बताई जाती है, उस समय भगवान द्वारा प्रतिपादित पुरुषकी ७२ और स्त्रियोंकी ६४ कलाओंका बताना भी आवश्यक है तथा आजके युगमें उनका सीखना कितना महत्त्वपूर्ण है, किस वर्णके लिए किस कलाकी अधिक उपयोगिता है, और उससे जीवनका क्या सम्बन्ध है, आदि बातों पर भी प्रकाश डालना चाहिए।

(७) भगवानने पुत्र-पुत्रियोंको जिस ढंगसे शिक्षा दी थी, आज उसकी कितनी अधिक आवश्यकता है; इस विषय पर विद्वानोंके द्वारा प्रकाश डालना आवश्यक है। इस कल्याणकके दिन शिक्षा-संस्थाओंके बालक-बालिकाओंके भाषण, संवाद, कविता-पाठ और व्यायाम-प्रदर्शन आदिके प्रोग्राम रखना चाहिए।

(८) जिस समय भगवानकी राजगद्दी आदिका प्रदर्शन किया जाता है, उस समय रुपया देकर जिस किसीको राजा बनाकर भले ही बैठा दिया जाये, पर भगवानके मन्त्री कुछ राजनीतिज्ञोंको बनाकर उनकी राजनीतिपर इस ढंगके भाषण कराये जायें जिससे कि वर्तमान राजनीतिकी खराबियोंके ऊपर प्राचीन भारतीय राजनीतिकी धार्मिकताकी छाप जन-मानस पर अंकित हो सके।

(९) भगवानके आहार-दानके समय सैकड़ों गरीबोंको अन्न-वितरणकी व्यवस्था कराई जावे। पुराने वक्तमें गजरथोंके समय प्रतिष्ठाकारककी ओरसे सारी उपस्थित समाजको जीमनवार दिया जाता था। पर आज युगानुरूप कमसे कम करुणादानके रूपमें [illegible] दुखियोंको अन्न-वितरण तो अवश्य कराया जावे, प्रतिष्ठाकारककी ओरसे या जिनके यहाँ भगवानका आहार हो उनकी ओरसे हो।

(१०) भगवानके तपकल्याणके समय इन्द्र-इन्द्राणी बननेवालोंकी ओरसे, प्रतिष्ठाकारक, या आगत विशिष्ट व्यक्तियोंकी ओरसे चारों प्रकारके दानोंकी घोषणा ही नहीं, क्रियात्मक रूप तत्काल सामने आना चाहिए। भगवान दीक्षा लेते हुए किमिच्छक दान दिया करते थे, तब उनके कल्याणकोंका अभिनय करनेवाले श्रीमानोंसे उक्त आशा अधिक नहीं की जा सकती।

(११) भगवान्के समवसरणकी रचना यथार्थ समवसरणके ढंगपर हो, भगवानके चार मुख दिख सकें, इसकी भी व्यवस्था की जाना जरूरी है। चारों अनुयोगोंके रूपमें दिव्य ध्वनि प्रकट होना चाहिए। अर्थात् इस दिन विशिष्ट विद्वानोंके प्रभावक भाषण होना चाहिए।

(१२ निर्वाण कल्याणकके दिन योग निरोध क्रियाका शास्त्रीय विवेचन सुगम रीतिसे किया जाय तथा आजके चमत्कारपूर्ण तरीकोंमेंसे कोई ऐसा तरीका अपनाया जावे कि जिससे अग्निकुमारदेवोंके भगवानके शरीरको नमस्कार करते ही तत्काल अग्नि अपने आप प्रज्वलित हो जाय।

ये वे कुछ बातें हैं जिन्हें पंचकल्याणक प्रतिष्ठाके समय अपनाया जायें तो मुझे दृढ़ विश्वास है कि ये प्रतिष्ठायें जन-मानस पर अपना कुछ स्थायी प्रभाव अंकित कर सकेंगी।

आशा है कि अहार, जबलपुर आदि स्थानोंके प्रतिष्ठाकारक मेरे इन सुझावोंसे अवश्य कुछ लाभ उठायेंगे।

—(पं०) हीरालाल सिद्धान्तशास्त्री-देहली।